

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र एवं रांची विवि के तत्वावधान में व्याख्यान का आयोजन

रांची। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र क्षेत्रीय शाखा रांची एवं रांची विवि के सहयोग से 28 फरवरी को इंदिरा गांधी कला केंद्र लाइब्रेरी, अकादमिक विंग, पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग रांची विवि में दोपहर दो बजे से आदिवासी संदर्भ में भारत की सांस्कृतिक विरासत पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। दीपांकर चटर्जी सहायक प्रोफेसर आईआरटीडीएम के संकाय, श्री राम कृष्ण मिशन विवेकानंद शैक्षिक और अनुसंधान संस्थान (डीमड विवि) व्याख्यान के मुख्य वक्ता थे और इसकी अध्यक्षता प्रोफेसर डा.गीता ओझा, समन्वयक पुरातत्व और संग्रहालय विभाग रांची विवि ने की। डा.अजय कुमार मिश्रा क्षेत्रीय निदेशक ने स्वागत किया। दीपांकन चटर्जी ने अपने संबोधन में कहा कि भारत की सांस्कृतिक विरासत विविध समुदायों के विविध उप संस्कृतियों



छाया : राजकुमार

की एक सह संस्कृति है जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। उन्होंने आदिवासी कला और शिल्प कला को भारत की सांस्कृतिक विरासत के रूप में संरक्षित, संरक्षण, प्रसार और लोकप्रिय करने पर ध्यान केंद्रित करने पर ध्यान केंद्रित किया। यह जनजातीय कलाओं के संदर्भ में मूर्त, अमूर्त विरासत और यूनेस्को की विभिन्न योजनाओं की विशेषताओं को समझने का

एक शानदार अवसर था। व्याख्यान के बाद एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया। जहां प्रतिभागियों ने विषय से संबंधित कई तथ्यों के बारे में पूछताछ की जिसके बारे में डा. चटर्जी ने विस्तृत और सटीक जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के अंत में अपर्णा झा कोर्स समन्वयक, आरसीआर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।



‘मिलजुल कर करें सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा’

सेमिनार

रांची | वरीय संवाददाता

श्रीरामकृष्ण मिशन विवेकानंद एजुकेशनल एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट के सहायक प्राध्यापक डॉ दीपांकर चटर्जी ने कहा कि झारखंड के सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा के लिए हम सभी को मिलजुल कर प्रयास करना होगा। इसके लिए जरूरी है कि हम प्रागैतिहासिक काल से लेकर अब तक की जनजातीय संस्कृति से संबद्ध धरोहर को संरक्षित करने में योगदान करें।

वे शुक्रवार को रांची विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग में आयोजित सेमिनार में बतौर मुख्य वक्ता बोल रहे थे। इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्ट्स की रांची क्षेत्रीय शाखा एवं रांची विवि की ओर से देश की सांस्कृतिक धरोहर जनजातीय

मुख्य बातें

- जनजातीय संस्कृति व धरोहरों को संरक्षित करने पर जोर
- अपनी परंपरा को जीवित रखने के लिए कदम उठाने की कवायद

परिप्रेक्ष्य में विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया था।

उन्होंने कहा कि झारखंड समेत अन्य क्षेत्र में जनजातीय समाज की धरोहर अमूर्त और मूर्त रूप में विद्यमान हैं। इसमें पत्थरों पर उत्कीर्ण कलाकृति, कई तरह के शिलालेख, चित्रकारी और पर्व- त्यौहार शामिल हैं। उन्होंने बताया कि सांस्कृतिक धरोहर के महत्व को सबसे पहले हम सभी को समझना होगा। इसके लिए यह जरूरी है कि शिक्षा के माध्यम से पहचान हो। इसके अलावा साल में होने वाले पर्व-त्यौहार और



पुरातत्व विभाग में आयोजित सेमिनार में विशेषज्ञों को सुनते श्रोता। • हिन्दुस्तान

उससे जुड़ी परम्परा को कायम रखना भी सबसे बड़ी चुनौती है। भागदौड़ की जिंदगी में लापरवाही और उदासीनता से लोग अपनी परम्परा से दूर होते जा रहे हैं। इसी वजह से सांस्कृतिक धरोहर को

खतरा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्नातकोत्तर इतिहास विभाग की डॉ गीता ओझा ने किया। सेमिनार में आइजीएनसी के निदेशक डॉ अजय मिश्रा समेत कई शिक्षक और छात्र शामिल हुए।

IGNCA holds lecture on 'Cultural Heritage of India in Tribal Context'

PNS ■ RANCHI

Indira Gandhi National Centre for the Arts, Regional Centre Ranchi in collaboration with Ranchi University, organised a lecture on 'Cultural Heritage of India in Tribal Context' here on Friday. Dr. Dipankar Chatterjee, Assistant Professor, Faculty of IRTDM, Ram Krishna Mission Vivekananda Educational and Research Institute (Deemed

University) was the speaker of the lecture session and it was presided by Prof (Dr) Geeta Ojha, Coordinator, Department of Archeology and Museology, Ranchi University.

Dr. Ajay Kumar Mishra, Regional Director, RCR warmly welcomed the Chairperson, Speaker, dignitaries, guests and participants and gave a brief illustration about the importance of studying the rich tribal heritage of

India. Prof. Ojha articulated the necessity of gaining knowledge about the framework of tribal culture as a part of India's cultural heritage, especially for the students of this discipline.

Dr. Chatterjee presented a scholastic lecture, where he defined that, the cultural heritage of India is a coalescence of diversified sub-cultures of distinct communities of people, passed from generation to generation including customs,



practices, places, objects, artistic expressions and values.

Cultural heritage includes tangible culture (such as build-

ings, monuments, landscapes, books, works of art, and artifacts), intangible culture (such as folklore, traditions, language, and knowledge), and natural heritage (including culturally significant landscapes, and biodiversity).

According to Census 2011, the tribal people constitute 8.2% of the nation's total population, which is over 104 million people. Their unique tradition adds to the eccentricity

of India's cultural heritage.

In continuation to the above discussion, Dr. Chatterjee focused on safeguard, preservation, dissemination and popularization of Tribal Art and Craft as Cultural Heritage of India, in his lecture. It was a great opportunity to comprehend the attributes of tangible, intangible heritage and various schemes of UNESCO in the context of tribal arts. The various tribal

heritage and archeological sites were also explored through this lecture. The pivotal objective of this session was to make the upcoming generation, students and art aspirants aware of the rich tribal mores, which is a paramount part of cultural heritage of India. After the lecture, an interactive session was conducted where the participants enquired about multiple facts related to the topic and the Speaker enlightened them.